

## संस्कृत का अर्वाचीन काव्यसाहित्य में प्रदान ।

डॉ. विमला एस. चौधरी

संस्कृत विभाग

भक्तराज दादा खाचार विनयन और वाणिज्य महाविद्यालय, गढ़डा, गुजरात राज्य

मो.नं. ९४२९७१७२२१

[ई.मेल.drvimlabenschaudhary822024@gmail.com](mailto:ई.मेल.drvimlabenschaudhary822024@gmail.com)

### • Paper Abstract :

संस्कृत भाषा और साहित्य भारत की अमूल्य धरोहर के रूप में स्थापित है, जो भारतीय चिंतन, मनन और अनुभूति की वाहक है। त्याग, तपस्या और प्रकृति के सानिध्य से पोषित भारतीय संस्कृति के अद्वितीय सौंदर्य को संस्कृत साहित्य में अभिव्यक्त किया है। विदेशी आक्रमणों के बावजूद संस्कृत भाषा की अविच्छिन्नता और १८ वीं शताब्दी के विद्वानों के योगदान का उल्लेख किया गया है। १९ वीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल में ब्रिटिशों का संस्कृत विद्वानों से संपर्क, जिससे पाश्चात्य विद्वानों को भारतीय ज्ञान के रहस्यों को समझने में सहायता मिली। २० वीं शताब्दी में आधुनिक संस्कृत साहित्य के विकास पर विशेष ध्यान केन्द्रित करता है, इस दौरान नवीन काव्य प्रकार (जैसे - लोकगीत, हाईकु, तान्का, गज़ल) और प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी कृतियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। नारी-चरित्र प्रधान महाकाव्यों, दूतकाव्यों और खण्डकाव्यों की परंपरा का भी उल्लेख किया गया है। आधुनिक संस्कृत साहित्य प्राचीन परम्परा से हटकर एक नया मार्ग प्रशस्त कर रहा है, जिसमें भौगोलिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक वास्तविकताओं के साथ-साथ राष्ट्रचेतना, सामाजिक विषमताएं, स्व-अस्तित्व की खोज और वैश्विक चेतना का समावेश है। संस्कृत भाषा के निरंतर प्रवाह को बनाए रखने और आधुनिक संस्कृत रचनाओं को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

• **Paper keywords :-** संस्कृत साहित्य, आधुनिक संस्कृत काव्य, पुनर्जागरण काल, काव्य

प्रकार, प्रमुख रचनाकार, भारत की सांस्कृतिक धरोहर।



• Paper Title : - संस्कृत का अर्वाचीन काव्यसाहित्य में प्रदान ।

संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य भारत की अनमोल निधि है । संस्कृत भाषा भारत की प्राणभूत भाषा है, भारत का गौरव है । भारत के बौद्धिक सम्पन्न लोगों का चिंतन, मनन, विश्लेषण, लौकिक-अलौकिक अनुभूति संस्कृत भाषा में ही निहित है । 'काव्यदर्श' में आचार्य दण्डीने कहा है कि,

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।

तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥'

भारत का समस्त प्राचीन ज्ञान-भण्डार संस्कृत भाषा में ही है । वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिग्रंथ, दर्शन, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गीतिकाव्य, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, वास्तुकला, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, गणित रसायणशास्त्र जैसे अनेकों विषयों का ज्ञान संस्कृत में निहित है । त्याग से परिपूर्ण, तपस्या से पवित्र, प्रकृति के सानिध्य में पोषित हुई भारतीय संस्कृति का अनुपम सौंदर्य संस्कृत साहित्य में स्वयं का तेज फैलाता हुआ सहृदय को स्वयं की ओर आकर्षित करता है । भारत में अनेक विदेशीजन का आगमन हुआ था, तुर्की, मुघल, अंग्रेजों, फ़िरंगी ऐसे तो अनेक विदेशी आक्रमण के बीच भी संस्कृत विद्वानों ने संस्कृत भाषा को मरने नहीं दिया । १८ वीं सदी में विश्वेश्वर पंडित, रामदेव, घनश्याम, जगदीश्वर, पेरुसुरि, युवराज राजवर्मा, भूदेव शुक्ल, शंकर दीक्षित आदि के द्वारा काव्य, नाटक आदि से संस्कृत साहित्य को सजाया है । १९ वीं सदी का समय 'पुनर्जागरण-काल' अंतर्गत आता है, उसमें ब्रिटिशजनों का धीरे-धीरे संस्कृत के प्रति सम्पर्क बढ़ता ही गया, संस्कृत का विशाल वाङ्मय विद्वानों को आश्चर्य में डाल देता था । पाश्चात्य विद्वानों की वैज्ञानिक तथा बौद्धिक दृष्टि को संस्कृत भाषा ने कहीं रहस्यों को में मदद की थी, इस तरह संस्कृत का प्रकाश समग्र विश्व में फैल गया । इस पुनर्जागरणकाल के मुख्य कवियों में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का 'सामव्रतम्' और 'शिवराजविजयः' हरिदास 'शिवाजीचरितम्' आदि मूलशंकर याज्ञिक का छत्रपतिसाम्रज्यम्, प्रतापविजयम्, संयोगिता स्वयंवरम्, अभिनवरामानुजाचार्य, शिवद्विज, वल्लिशाय मुख्य कवि स्वर थे । स्थापनाकाल (ई.स. १८८४ से १९५०) इस समय में संस्कृत के विद्वान पाश्चात्य साहित्य के संपर्क में आते गये, संस्कृतभाषा में भी अन्य भाषाओं की कृतियों का अनुवाद हुआ, जिसमें आर.कृष्णमाचारी ने शेक्सपियर की नाट्यकृति 'मिड समर नाइट्स ड्रीम' का अनुवाद 'वासन्तिकस्वप्नः' (१८९२)



Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit

**SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE**

Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.

Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA' = 4 Star

Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : shodhsanchay@gmail.com

Volume - 3

नामक किया । श्री शैल दीक्षित ने (ई.स. १८७७) 'कोमेडी ओफ एररस' का 'भ्रान्तिविलासः' नामक अनुवाद किया था । समृद्धिकाल (ई.स. १९५० से १९८५) १९४७ में भारत देश आजाद हुआ ये अमर घटना के बाद चार दशक में संस्कृत काव्य में नवविन्य का प्रस्फुटन हुआ । ब्रह्मानन्द शुक्ल कृत 'नेहरुचरितम्', विश्वनाथ केशव छत्र कृत 'सुभाषचरितम्', माधव श्रीहरि अने कृत 'तिलकयशोऽर्णवः', त्र्यम्बक शर्मा भंडार कर कृत 'विवेकानन्दचरितम्', पद्मशास्त्री डॉ.सत्यव्रत शास्त्री कृत 'इन्दिरा-चरितम्', 'रामकीर्तिमहाकाव्यम्', डॉ.रेवाप्रसाद द्विवेदी कृत 'सीताचरितम्', डॉ.सुबोधचन्द्र पन्त कृत 'झांसीश्वरीचरितम्', ओगटि परीक्षित शर्मा कृत 'यशोधरामहाकाव्यम्' आदि की रचना हुई । इस काल में ही नारी-चरित्र प्रधान महाकाव्यों की परंपरा भी समृद्धिकाल की एक सिद्धि कह सकते हैं ।

दूतकाव्यम् - समृद्धिकाल में अनेक दूतकाव्य की रचना हुई थी, उस रचना में हरिनारायण दीक्षित कृत 'हनुमद्दूतम्', डॉ. इच्छाराम द्विवेदी का 'दूतप्रतिवचनम्', डॉ.राजेन्द्र मिश्र कृत 'मृगायङ्कदूतम्', कृपाराम त्रिपाठी कृत 'तरङ्गदूतम्' आदि मुख्य हैं ।

खण्डकाव्यम् - डॉ.रमाकान्त शुक्ल का 'भाति मे भारतम्', 'जय भारतम्', 'भाति मोरिशसम्', डॉ.राधावल्लभ त्रिपाठी का 'धरित्रीदर्शनम्' आदि हैं ।

महाकाव्यखण्डम् - डॉ. हर्षमाधव रचित 'बृहन्नला'(१९९५) खण्डकाव्यम् और महाकाव्यम् के मध्ये एक नया प्रकार है ।

आधुनिक संस्कृत काव्य में नूतन लोकगीत और नये काव्यप्रकार की रचना की हुई है । जिसमें स्कन्धहारीय, चैत्रक, कजरी, नक्तक (नकरा), प्रचार, सूतगृहगीत(सोहर), रसिक(रसिया), लाङ्गलिक, फाल्गुनिक, गलज्जलिका (गज़ल) जैसे ऊर्मिकाव्यम् तथा हाईकु, तान्का, सिजो, मोनोईमेज जैसे आधुनिक काव्यप्रकार से संस्कृतकाव्य खिल उठा है । सत्याग्रहगीता, उत्तरसत्याग्रहगीता, स्वराजविजयः इस कृतियों में पण्डित क्षमादेवी (१८६०-१९५४) ने गांधीजी का चरित्र का वर्णन किया है । क्षमारावने 'कथापञ्चकम्', 'ग्रामज्योतिः', 'शङ्करजीवनाख्यानम्' आदि ग्रंथों की रचना की है ।

- 'मत्तुस्वामीदीक्षितचरितम्' महाकाव्य 'वेंकटराम राघव'(ज.१९०८)द्वारा रचित है जिसमें संगीत, नाट्य, शिल्प, कला आदि का ज्ञान, दक्षिणभारतीय तीर्थो-नगरो आदि का वर्णन, भारतीय संस्कृति की वैविध्यसभर जानकारी से सम्पन्न है । 'अभ्रमभ्रममभ्रमाय' में यूरोप की अपनी स्मृतियों का वर्णन किया है । 'इतिहासजरद्धात्री वत्सश्च' में विश्व



इतिहास का आर्षदृष्टि से निरूपण किया है। 'आयोगयोगः' में दाम्पत्यभावना का निरूपण किया है।

- 'जानकीवल्लभजी' के द्वारा सोलह साल की उम्र में 'काकली' काव्यसंग्रह (१९३५) प्रकाशित हुआ। 'बन्दीजीवनम्' में कारागार में बन्धे राष्ट्रसेवको के जीवन को मर्मदारक आलेखन किया है।
- 'बचुलाल अवस्थी' को (ज. १९१८) अर्वाचीन संस्कृत कवियों के 'भीष्मपितामह' कहा जाता है। 'मातृस्तवकः' में वात्सल्य की धारा का प्रगटीकरण किया है। 'शुकवृत्तम्', 'एकदन्तवृत्तम्' आदि उनके काव्य उत्तम काव्य है।
- 'जगन्नाथ पाठक' (ज. १९३४) ने 'कपिशायिनी' (१९८०), 'मृद्वीका' (१९८३), 'मिपासा' (१९८६), 'विच्छिन्तिवातायनी' (१९९५) आदि काव्यसंग्रहों की रचना की है।
- 'अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र' (ज. १९४३) को आधुनिक संस्कृतकाव्यों का मुख्य स्तम्भरूप कह सकते हैं। गीत, गज़ल, शतक, महाकाव्य, अष्टक, एकांकी रूपको, नाटक, कथा, आख्यायिका, खण्डकाव्य, अछंदास आदि काव्यप्रकारों की रचना की है।
- 'केशवचन्द्र दाश' (ज. १९५५) ने १३ उपन्यास, ६ काव्यसंग्रहों, १ बालोपन्यास, ३ वार्तासंग्रहों, २ बालकथासंग्रहों आदि मिलकर संस्कृत वाङ्मय में आधुनिक साहित्य दिया है।
- 'डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी' (ज. १९३५) ने संस्कृत में अनेकों रचना की है। उन्होंने 'प्रमथः' नामक प्रसिद्ध काव्यसंग्रह की रचना की है।
- 'डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी' (ज. १९४९) कवि विवेचन, नाट्यकाला के विद्वान आचार्य थे। आधुनिकता का स्पर्श उनको नविन्यपूर्ण रचनाकार की श्रेणी में रखते हैं। उन्होंने 'सन्धानम्' (१९८१) 'लहरीदशकम्' (१९९१), 'गीतधीरवम्' (१९९६) नामके काव्यसंग्रहों की रचना की है।
- 'डॉ. देवदत्त भट्टी' (ज. १९३९) आधुनिक कवियों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। 'काञ्चनीवासयष्टिः' आदि ग्रंथों की रचना की है। उन्होंने छंदस काव्यों का आरंभ १९६९ से किया है।
- 'डॉ. रमाकान्त शुक्ल' (ज. १९४०) 'अर्वाचीन संस्कृतम्' नामकी पत्रिका के सम्पादक और तंत्री और अपनी बुलंद आवाज़ से गेय रचना का गान टीवी और रेडियो पर छाये



स्वतन्त्रता भणामि,' 'भाति मोरिशसम्', 'वदन नेतारो मनाक्' आदि काव्यों को 'देववाणीसुवासः' में समावेश किये हैं ।

- डॉ. हर्षदेव माधव' (ज.१९९५) अतिथार्थवाद, क्रिओभ, विद्रोह, लघुकल्पन, काव्यमार्ग, प्रतिको का सर्वथा नावीन्यपूर्ण काव्यमार्ग को विशेषित करते हैं । हर्षदेव माधव युरोपकी सभ्यता के खंडेरो, महायुद्धों की भयंकरता, विश्वमानवता के नये स्वप्न नयी आकांक्षा, नगरजीवनकी विषमतायें आदि से अपने काव्यों को सजाया है । डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी अपना मत देते हुए कहते हैं की 'काव्यप्रसाद के नूतन द्वारों को उद्घाटित किया है (डॉ. हर्षदेव माधव ने) ।'
- 'डॉ.राजेन्द्र नाणावटी' (ज.१९३९) ने जीवन की प्रौढावस्था में 'मरीचिका' नामक काव्यसंग्रह देकर संस्कृतमें गुजरात का विशिष्ट प्रदान दिया है । परिवर्तन होते प्रेमसम्बन्धों की विसंगति और अस्थायी प्रेमकी निराशाओंको तथा भंगुरता से उत्पन्न विषाद केन्द्र में है ।

आधुनिक संस्कृत कवियों में उत्तमवृद्ध पंक्तियाँ में आचार्य रमेशचन्द्र शुक्ल, आचार्य बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते, अमीरचन्द्र शास्त्री, प्रभुदयालु अग्निहोत्री, डॉ.हरिहर त्रिवेदी, डॉ.श्रीधर भास्कर वर्णकर, डॉ.प्रभातशास्त्री, कविकृष्णप्रसाद धिमिरे, आचार्य प्रभुदत्त स्वामी, पं.जगूबकुलभूषणदा, पो.ई.पी. भरत पिषारटि, डॉ.प्रभाकर नारायण, बच्चुलाल अवस्थी, जानकीवल्लभ शास्त्री, रामकृष्ण शास्त्री, डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर हैं ।

मध्यमवृद्ध पंक्तियाँ के कवियों डॉ.शिवदत्तशर्मा चातुर्वेद, डॉ. जी.बी. पलसुले, पं. ओगेटि परीक्षित शर्मा, डॉ.सत्यव्रत शास्त्री, डॉ. रामकरण शर्मा, डॉ.रेवाप्रसाद द्विवेदी, डॉ.श्यामदेव पाराशर, प्रा.हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, श्री भि.वेलणकर, डॉ.रुद्रदेव त्रिपाठी, गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री, डॉ.वनेश्वर पाठक, डॉ.बदरीनाथ कल्ला आदि हैं ।

प्रौढ पंक्तियाँ में डॉ.उमाकान्त शुक्ल, डॉ.विष्णुकान्त शुक्ल, डॉ.देवदत्त भट्टि, डॉ. पद्मशास्त्री, डॉ.शंभुनाथ आचार्य, श्रीमती देवकुमारी घई, डॉ.कृष्णकान्त शुक्ल, डॉ. कृष्णलाल, कृष्णदत्त शर्मा, डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी, अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र, डॉ. प्रेमनारायण द्विवेदी, डॉ.रामकिशोर मिश्र, श्रीभाष्यम्, विजयसारथि, डॉ.वी.कण्णन, श्रीसुन्दरराज, डॉ.पुष्पा दीक्षित, डॉ.नलिनी शुक्ला, डॉ.मनोरमा तिवारी, डॉ.लीना रस्तोगी आदि हैं ।

युवा पंक्तियाँ में वीरेन्द्रकुमार जा, डॉ.हरिदत्त शर्मा, डॉ.केशवचन्द्र दाश, डॉ.राधाकुमार त्रिपाठी, डॉ.कामताप्रसाद त्रिपाठी, श्रीकृष्ण सेमवाल, डॉ. हरिदत्त शर्मा, डॉ.विन्ध्येश्वरीप्रसाद

मिश्र, डॉ. हर्षदेव माधव, डॉ. ईच्छाराम द्विवेदी, केशवचन्द्र दाश, डॉ.जयदेव जानी, डॉ.जनार्दन प्रसाद पाण्डे आदि है ।

किशोर पंक्तियाँ में वो किशोर और किशोरी आतें जो विद्यालय-महाविद्यालय में अभ्यास करते हैं । संस्कृत भारती के अविरत प्रयास से छात्र कविकर्मको करते हैं ।

संस्कृत काव्यों की अर्वाचीनता से आरंभ होकर आधुनिकता पर्यन्त रचना रही है । परंपरा से भिन्न मार्ग का सर्जन हुआ है । उसमें भौगोलिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक स्थितिको लक्ष्य में लिया है । जाग्रत राष्ट्रचेतना के भी दर्शन होते हैं । सामाजिक विषमतायें भी देखने को मिलती हैं । स्व-अस्तित्व की खोज हुई है । विडंबनायें, विच्छिन्नता, एकांकी जीवन, निराशा, आक्रोश, विद्रोह आदि भावो कि अभिव्यक्ति हुई है । वैश्विक भाषाओं के सम्पर्क होने से काव्य-चेतना का विस्तार हुआ है । विषयों, भाषाशैली, अलंकारयोजना अभिव्यक्ति में प्रयोगशीलता दिखाई देती है ।

अर्वाचीन संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध काव्यसंग्रह -

‘मुद्विका’ (अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र - १९८५) मुद्विका में डॉ.राजेन्द्र मिश्रने अपनी लेखनी से संस्कृत रसिकों के हृदयको आनंदित किया है । ५१ काव्यों का संग्रह अर्वाचीन काव्यसंग्रहो में कण्ठाभूषण साबित हुआ है । नमस्या विभाग में प्रथम परमेश्वरी को प्रार्थना की है । जैसे

मम विचिन्तितम् शिवसमन्वितम् !

भवतु बुधाभरणम् ! त्वमसि जननि ! शरणम् ।<sup>३</sup>

त्वदीयवदनं मया दिने दिने पीतम् ।<sup>३</sup> इस में प्रेम की आह्लादकता के दर्शन होते हैं । यौवनमपि विधुरं त्वया विना<sup>४</sup> में भावना के दर्शन होते हैं । कवि कि पिपासा का वर्धन हुआ है वो कहते हैं की, पिपासा वर्धते कामं शुभे ! मे देहि पानीयम् ।<sup>५</sup> तव चिन्तया विगता निशा तव चिन्तया विगतं दिनम् ।<sup>६</sup> प्रकृति के प्रति प्रेम के भी दर्शन होते हैं । राधाकृष्णकी याद भी है कवि कहते हैं की,

कर कमले लसति पिचकारी

विहरति मुरारिः ।

नहि रक्षति परिचयं न शीलम्

पश्यति न वयो गिरिधारी



विहरति मुरारिः ॥<sup>८</sup>

गज़ल का भी प्रयोग हुआ है ।

जाने न हन्त ! पङ्कजैः केषामपाकृतम् ।

चन्द्रो यथा नु बाधते सूर्यो न बाधते ॥

सौभाग्यमेव यतया तिर्यग् विलोकिताम् ।

कमं यथा नु बाधते वक्रं न बाधथे ॥<sup>९</sup>

इनके काव्यों में राष्ट्रों के प्रदेशों तथा राष्ट्रभक्ति की भावनार्यें भी उजागर होती हैं ।  
संस्कृत के - प्रति प्रेम, कवाली, दोधक, मातृवन्दना भी देखने को मिलती हैं ।

‘अलका’ (कवि डॉ. केशवचन्द्र दाश) - डॉ. दाश की अनोखी कथनरीति है । संस्कृत की  
रुढिगत रचना से भिन्न ही रचना है । उसमें आधुनिक यक्षकी व्यथा की कथा है । जैसे -

अलकातो निवर्तते

शरत् संबोधनं मम ।<sup>१०</sup>.....

शृणोतु वा न शृणोतु कोऽपि

अहं भरमि स्वरं संगीते<sup>११</sup> ....

प्रेम के लिये भी डॉ.दाश ने सुन्दर विचार दिया है दाश कहते हैं की,

प्रणवस्य स्पन्दनमिव

प्रणवस्य प्रथमनिनादः ।

केवल बलवती व्यथा

अभावे भावविलम्पिता ।<sup>१२</sup> .....

तत्त्वज्ञान के अभ्यास की विचारधारा भी ‘अलका’ में मिलती है ।

शुद्धोऽस्मि..... बुद्धोऽस्मि

अनाबद्धोऽस्मि<sup>१३</sup>.....



‘सन्धानम्’ (डॉ.राधावल्लभ त्रिपाठी) में कुल ५३ काव्यों का संग्रह है । इस काव्यसंग्रह में आधुनिक युग के साथ जुड़ाव है और प्राचीन काव्यविश्व के साथ मिलन देखने को मिलता है । संस्कृत की जीर्ण हुई काव्य ईमारत का आधुनिक पुनरुद्धार है । ‘सन्धानम्’ काव्य पृथ्वीकी अत्यंत पास हो, ऐसा देखने को मिलता है । पृथ्वीकी सुन्दरता के उपासक डॉ.त्रिपाठीजी ने पृथ्वी के सुन्दरता के चित्रको अनेक जगहों पे रेखांकित किया है ।

जैसे- एषा शेते हयलसल्लिता किलन्नगात्रीव शीते

प्रच्छाद्य स्वां शिथिलतनुं तूललेशैर्धरित्रीं ।<sup>13</sup>

‘भाति मे भारतम्’ (डॉ.रमाकान्त शुक्ल) - इस में १०८ श्लोक हैं, उस श्लोको में मानों ‘भारतमाता’ की भक्तिकी माला गूँथ दी हो । राष्ट्रचेतना को प्रगट करने के लिए इस लिए ये काव्यसंग्रह राष्ट्रगौरव की ‘दीपशिखा’ बन गया है ।

जैसे - मानवामानितं दानावाबाधितं निर्जरारधितं सज्जनासाधितम् ।

पण्डितैः पूजितं पक्षिभिः कूजितं भूलले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥<sup>14</sup>

‘रामकीर्तिमहाकाव्यम्’ (डॉ.सत्यव्रत शास्त्री) - थाईलेन्ड में प्रचलित रामकथा को निरूपित महाकाव्य में भाव, अलंकार, निरूपित-शक्ति आदि हैं । संस्कृत में आलेखन हुई थाईरामायण की कथा २५ सर्गों में महाकाव्य का रूप लेकर विशाल फलक पर रामकथा का विस्तार हुआ है ।

‘मृत्कूटम्’ (कविश्री भास्कराचार्य) - ये आधुनिक काव्य में सच्चे मनुष्य ने स्वयंकी भाषा में गुप्तयुग के प्रेम से बहार आकर, स्वहृदय के प्रेम की शोध आरंभ की है । संस्कृत काव्य भी मनुष्यों को पानेकी, शोधकी, मिलनकी, समाधानकी, स्वयं को भीतर से जगाने की प्रेरणा देती है, उसमें ये ‘मृत्कूटम्’ काव्यसंग्रह आता है ।

‘प्रमथः’ (डॉ.रेवाप्रसाद द्विवेदी) - सिद्धहस्त कवि और विद्वानने टाईपोग्राफी का सुन्दर वर्णन किया है । डॉ.द्विवेदी के काव्यसंग्रहों में विषको धारण करने के बाद ‘निलकण्ठ’ बनी वाणी है । काव्यरसिकों को ये ‘‘प्रमथः’’ काव्यसंग्रह अवश्य हृदय में बस जाता है ।

ईशा (कवि डॉ.केशवचन्द्र दाश) ये काव्यसंग्रह संगीतरहिता का अनुभव करवाता है ।



जैसे - गोबद्धकीलकमिव पीठायते व्यथा<sup>19</sup>

इच्छायाः शेषकणे जीवनं तथापि जृम्भते<sup>20</sup>

‘रथ्यासु जम्बूवर्णानां शिराणाम्’ और ‘अलकनन्दा’ (हर्षदेव माधव) - हर्षदेव माधवने अपने काव्यों में संस्कृत भाषा की अतिरिक्त कुछ भी परंपरागत नहीं रखा। उनके विषयों, काव्यस्वरूपों, कल्पनार्ये सब में नवीनता प्रगट होती है। ‘मृगया’ में हर्षमाधव नव्यभाव-संवेदनयुक्त २० काव्यों को संकलित किया है। ये नव्यप्रस्थान को पोषित करते काव्यों सांप्रत संस्कृतभारती महिमा को प्राप्त हुई है। ‘लावारसदिग्धाः स्वप्नमयाः पर्वताः’ नामक काव्यसंग्रह द्वारा हाईकु, तान्का और सोजो नामक काव्यप्रकार हर्षदेव माधव ने संस्कृत में प्रतिष्ठित किया है।

‘मरीचिका’ (डॉ. राजेन्द्र नाणावटी) नामक काव्यसंग्रह में अछांदस और हायकु की प्रतीति द्वारा आधुनिकता शुरू हुई है। अछांदस काव्यों में केवल नविनता ही नहीं, भावों की मुक्त अभिव्यक्ति, कल्पना का विपुल प्रयोग, आधुनिक शब्दों का समावेश आदि शैली कविप्रतिभा के अनुरूप है।

जैसे - ‘किं न मूल्यं ममैतावद् यत्स्नेहमहमाप्नुयाम्?’<sup>21</sup>

‘गीतिकन्दलिका’ (डॉ. हरिदत्त शर्मा) - इस काव्यसंग्रह में ३३ काव्यों का संग्रह हुआ है। जिस में ‘मम देश’, ‘कालिदासः’, ‘सागरतरङ्ग’, ‘वसन्त विलसनम्’, ‘वर्षागीतम्’, ‘प्रकृतिदेवी !’, ‘त्वम्’ आदि काव्य सचमें किसीको भी आनन्द देने वाले हैं।

‘आग्नेयः’ (श्री ऋषिराज अग्निहोत्री) - इस काव्यसंग्रह में गद्य, पद्य, गेय काव्यों का संग्रह है। विविध देवी-देवता की स्तुतियाँ, गरबा, सरल और भाववाही भाषा का प्रयोग किया है।

‘नूतनगीताञ्जलिः’ - (घनश्याम त्रिवेदी) - इस संग्रह में गीतिकाव्य है। संस्कृत के समीप ले जाने का प्रयास सच में पसंद आये ऐसा है।

‘गङ्गा’ - (डॉ. गौतम पटेल) - भाषाकी सरलता, प्रवाहिता, लयमाधुर्य, भाववाहिकता संचिकर है।

संस्कृत में महाकवि भास, महाकवि कालिदास, महाकवि माघ, महाकवि बाण, महाकवि महाकवि भवभूति आदि संस्कृत जगत के प्राण हैं पर आधुनिक संस्कृत साहित्य एक प्रवाह जैसा है। आधुनिक संस्कृत रचना के प्रति प्रोत्साहन और स्वीकार का भाव होना चाहिए।

संस्कृत भाषा का प्रवाह निरंतर बहता रखने का उत्तरदायित्व संस्कृत भाषा के प्रति संबंध रखनेवाले सन्माननीयगणों का दायित्व है । प्रवाह बहता रहेगा तो उसमें नविन मार्ग प्राप्त होंगे, नविन मार्ग पर प्रवाहित होकर संस्कृत भाषा की ही वृद्धि होगी ।

■■■

● पादटीप :-

१. काव्यदर्श :- १.३३
२. मुद्रिका पृ-३
३. मुद्रिका पृ-११
४. मुद्रिका पृ-१२
५. मुद्रिका पृ-११
६. मुद्रिका पृ-११
७. मुद्रिका पृ-२७
८. मुद्रिका पृ-४१
९. अलका पृ-१
१०. अलका पृ-१२
११. अलका पृ-५६, ७६
१२. अलका पृ-८३
१३. सन्धानम् पृ-६८
१४. भाति में भारतम् पृ-३
१५. ईशा पृ-६
१६. ईशा पृ-२४
१७. मरिचिका पृ-१

● सन्दर्भग्रन्थाः

१. काव्यादर्शः - महाकविदण्डयाचार्यविरचितः, व्याख्याकारः -आचार्यः श्रीरामचन्द्रमिश्रः, चौखम्बा

विद्याभवन, वाराणसी द्वि.सं - १९९६

२. आधुनिक संस्कृत साहित्यनो इतिहास - डॉ.हर्षदेव माधव, डॉ.पारुल चौहण, प्रा.हसमुष



બારોટ, બાબુભાઈ એચ. શાહ - પાર્શ્વ પબ્લિકેશન,

અમદાવાદ બીજી આવૃત્તિ - 2016

૩. મુદ્ત્વીકા - અભિરાજ ડૉ.રાજેન્દ્ર મિશ્ર, વૈજયન્ત પ્રકાશક, ૧૯૮૫
૪. અલકા - કવિ ડૉ.કેશવચન્દ્ર દાશ, લોકભાષાપ્રચાર સમિતિ, પુરી, ૧૯૮૬
૫. સન્ધાનમ્ - સંસ્કૃત પરિષદ, યુનિ.સાગર, ૧૯૮૯
૬. ભાતિ મે ભારતમ્ - ડૉ. રમાકાન્ત શુક્લ, દેવવાણી પરિષદ, દિલ્લી, ૧૯૮૦
૭. ઈશા - કવિ ડૉ.કેશવચન્દ્ર દાશ, લોકભાષા પ્રચાર સમિતિ, પુરી ૧૯૯૨
૮. મરીચિકા - ડૉ. રાજેન્દ્ર નાણાવટી, પાર્શ્વ પ્રકાશન, અમદાવાદ પ્ર.આ.૧૯૯૩

■ ■ ■